

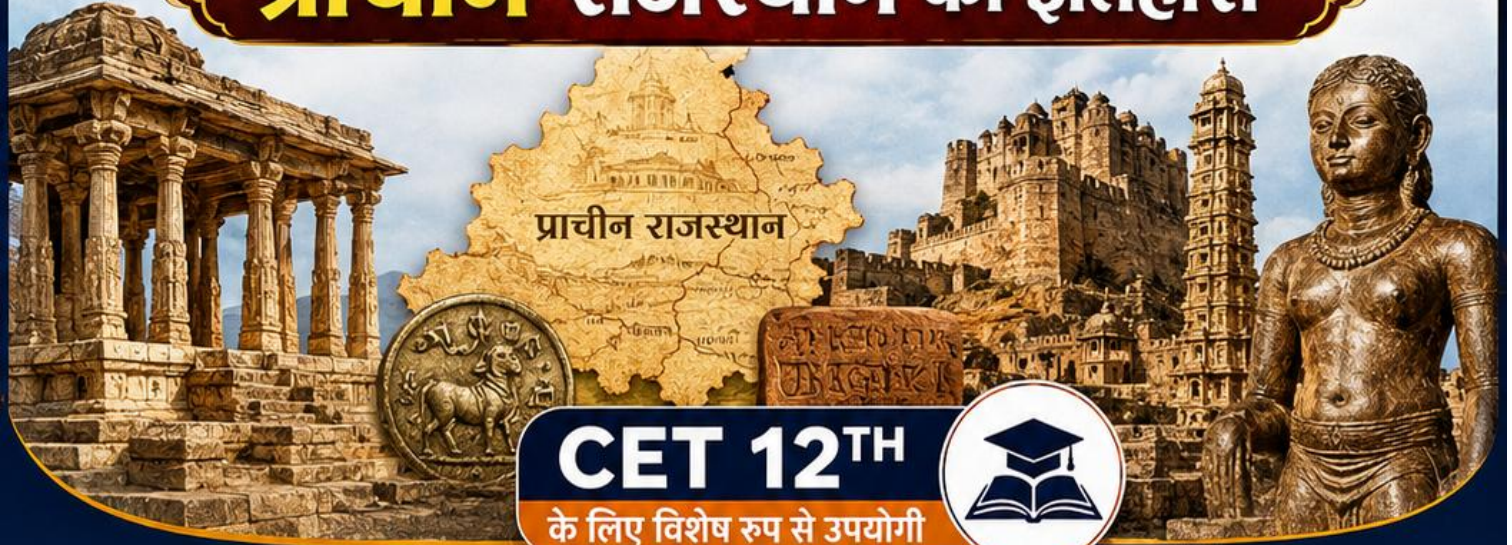
RBSE एवं
NCERT
आधारित

आपकी
सफलता
का साथी



राजस्थान इतिहास

प्राचीन राजस्थान का इतिहास



CET 12TH

के लिए विशेष रूप से उपयोगी



सरल भाषा में
विस्तृत अध्ययन



महत्वपूर्ण प्रश्न
(उत्तर सहित)



आरेख, मानचित्र
एवं तालिकाएँ



परीक्षा केंद्रित
सामग्री



NCERT आधारित
वस्तुनिष्ठ प्रश्न



CET 12TH
के लिए उपयोगी

RBSE एवं **NCERT** आधारित

CET 12TH के लिए

CREATED BY

MARUDHARA EXAM



www.marudharaexam.in





Unit - 1

Marudhara
Exam

राजस्थान का इतिहास



* राजस्थान नाम की उत्पत्ति :-

- सन् 1800 ई. - सर्वप्रथम "जॉर्ज थॉमस" ने "राजपूताना" शब्द का उपयोग किया।
- सन् 1829 ई. - कर्नल जेम्स टॉड ने अपनी पुस्तक में इसका नाम 'रायथान' या 'राजस्थान' रखा।

कर्नल जेम्स टॉड की पुस्तक :- "एनल्स एण्ड एण्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान"

- 30 मार्च 1949 - सर्वसम्मति से नाम "राजस्थान" रखा गया।

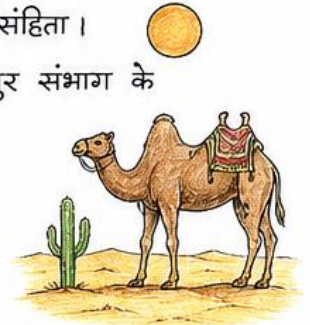
Note :- 1949 ई. से पूर्व "राजस्थान" नाम से किसी भौगोलिक इकाई का अस्तित्व नहीं था।

* राजस्थान के क्षेत्रों के प्राचीनतम नाम :- मरु, धन्व, जांगल, मत्स्य, शूरसेन आदि।

(ऋग्वेद, महाभारत में इनका उल्लेख है)

(1) मरु :- आर्यों का प्रारम्भिक जनतंत्र।

- वर्णन :- पौराणिक ग्रन्थों, रामायण, चरक संहिता, महाभारत एवं बृहदसंहिता।
- मरु और धन्व दोनों का अर्थ एक ही हैं, और इनका प्रयोग जोधपुर संभाग के मरुस्थल के लिये हुआ है।
- जोधपुर पहले 'मरु', फिर 'मरुवार' इसके बाद 'मारवाड़' कहलाया।
- इसमें वर्तमान के बीकानेर, नागौर, चूरु, गंगानगर, जैसलमेर, एवं बाड़मेर के कुछ भाग सम्मिलित थे।



(2) जांगल :- इस शब्द का प्रयोग उस क्षेत्र के लिये किया गया है जहाँ शमी, कैर या पीलू आदि होते हैं।

- क्षेत्र :- वर्तमान बीकानेर, नागौर एवं जोधपुर का कुछ भाग।
- राजधानी :- अहिछत्रपुर [वर्तमान नागौर]
- पौराणिक अनुसार बलराम एवं श्रीकृष्ण द्वारिका जाते समय यहाँ से गुजरे थे।



(3) मत्स्य :- ऋग्वेद में उल्लेख।

- महाभारत काल में राजधानी विराटनगर [बैराठ]
- इसका वर्णन चीनी यात्री युवान च्यांग ने किया।
- क्षेत्र :- जयपुर, अलवर, भरतपुर।



महत्वपूर्ण तथ्य :-

- "राजपूताना" शब्द का प्रथम प्रयोग - जॉर्ज थॉमस (1800 ई.)
- "राजस्थान" नाम का उपयोग - कर्नल जेम्स टॉड (1829 ई.)
- राजस्थान नाम स्वीकृत - 30 मार्च 1949
- जांगल प्रदेश की राजधानी - अहिछत्रपुर (नागौर)
- मत्स्य प्रदेश की राजधानी - विराटनगर (बैराठ)
- मारवाड़ का प्राचीन नाम - मरु

* एक नजर में :-

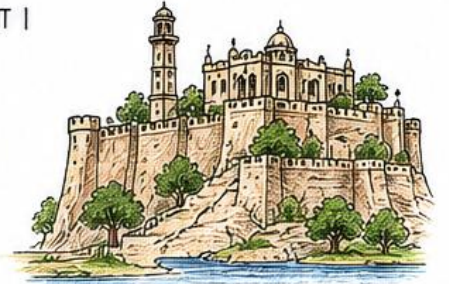
प्रदेश	राजधानी	वर्तमान क्षेत्र
मरु	—	बीकानेर, नागौर, चूरु, जैसलमेर, गंगानगर, बाड़मेर (कुछ भाग)
जांगल	अहिछत्रपुर (नागौर)	बीकानेर, नागौर, जोधपुर (कुछ भाग)
मत्स्य	विराटनगर (बैराठ)	जयपुर, अलवर, भरतपुर

- * सिकंदर के आक्रमण के पश्चात् अपनी स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने हेतु पंजाब और टक्क की कुछ जातियाँ राजस्थान आकर बसी।
जैसे :- शिवि, अर्जुनायन, मालव आदि।



(1) शिवि :-

- क्षेत्र :- आधुनिक उदयपुर के पूर्व, पश्चिम तथा उत्तर का संभागीय प्रदेश।
- शिवि जाति के आधिपत्य के कारण जनपद “शिवि जनपद” कहलाया।
- राजधानी मवझमिका या माध्यमिका [अवशेष चित्तौड़गढ़ के पास नगरी नामक गाँव से मिले]
- अन्य नाम :- मेदपाट (मेवाड़) तथा प्राम्बाट।



(2) अर्जुनायन :-

- क्षेत्र :- अलवर - भरतपुर प्रान्त।
- अर्जुनायनों ने मालवों के साथ मिलकर विंदशी क्षत्रपों को हराया।



(3) मालव :-

- शक्ति का केन्द्र - जयपुर के निकट “नगर” नामक स्थान (वर्तमान में “टोंक” जिले में)
- बाद में ये अजमेर, टोंक, एवं मेवाड़ क्षेत्र तक फैल गए।
- टोंक, प्रतापगढ़ एवं झालावाड़ का क्षेत्र मालव देश के अन्तर्गत आता था।
- मालवों की विजय का अभिलेख नांदसा (भीलवाड़ा) में लगा है।



(4) यौधेय :-

- राजस्थान के उत्तरी भाग का शक्तिशाली गणतंत्रीय कबीला।
- उत्तरी राजस्थान से कुषाण शक्ति को नष्ट करने का श्रेय।
- बृहत्संहिता नामक ग्रंथ में इनके पतन की चर्चा।



* इन जातियों ने राजस्थान में आकर यहाँ की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था को प्रभावित किया तथा अपनी गणतंत्रीय परम्पराओं को विकसित किया।

राजस्थान के विभिन्न क्षेत्र

Marudhara
Exam

(1) **मेवाड़ :-** प्राचीन शिवि जनपद वाला क्षेत्र

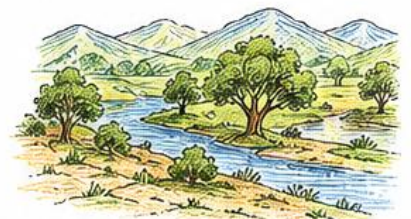
- वर्तमान उदयपुर, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, संलुंबर, राजसमंद, भीलवाड़ा जिले के क्षेत्र
- 7 वीं शताब्दी से आधुनिक राज. के निर्माण तक गुहिल - सिसोदिया वंश का राज
- बोली → **मेवाड़ी**
- राजधानी → नागदा, आहाड़, कल्याणपुर, चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, चावंड, उदयपुर



चित्तौड़गढ़ दुर्ग

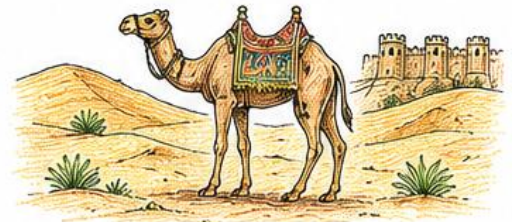
(2) **वागड़ :-** दो क्षेत्र वागड़ नाम से जाने जाते थे।

- (1) पिलानी के पास नरहड़, भादरा, नोहर तथा कनना का क्षेत्र
- (2) दक्षिणी राजस्थान के झुंजरपुर, बाँसवाड़ा का भूभाग [वर्तमान में इसे वागढ़ या वागड़ कहा जाता है।]
- बोली → **बागड़ी**



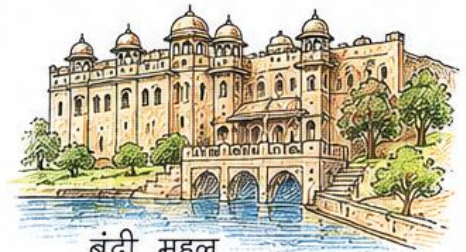
वागड़ क्षेत्र (झुंजरपुर - बाँसवाड़ा)

(3) **मारवाड़ :-** प्राचीन मरु प्रदेश ही मारवाड़ कहलाया
→ 7 वीं सदी में मंडोर (जोधपुर) क्षेत्र पर प्रतिहारों ने शासन किया।
→ बाद में राठौड़ वंश का आधिपत्य हुआ।



(4) **हाड़ौती :-** आधुनिक बूंदी और कोटा का क्षेत्र

- प्राचीनकाल में मीणा जनजाती का आधिपत्य [बूढ़ा मीणा के नाम पर बूंदी]
- बाद में चौहान वंश की हाड़ा शाखा का शासन
- बोली → **हाड़ौती**



बूंदी महल

(5) **ढूंढ़ाड़ :-** जयपुर एवं आस पास का क्षेत्र

- 12 वीं सदी में कछवाह राजपूतों ने मीना एवं बड़गुर्जरों को हराकर राजवंश की नींव रखी।
- बोली → **ढूंढ़ाड़ी**



आमेर दुर्ग (जयपुर)

(6) **मेवात :-** अलवर - भरतपुर का वह क्षेत्र जहाँ मेव शासन रहा।

- प्रसिद्ध नायक हसन खाँ मेवाती (राणा सांगा की ओर से बाबर के विरुद्ध खानवा युद्ध में लड़ते हुए वीरगति प्राप्त)



हसन खाँ मेवाती

राजस्थान के अन्य क्षेत्र :-

Marudhara
Exam

आधुनिक नाम	प्राचीन नाम
(1) जैसलमेर	माड़ या वल्ल
(2) जोधपुर का दक्षिण भाग	गुर्जरत्रा
(3) प्रतापगढ़	कांठल
(4) झालावाड़	मालवा
(5) चुरु, झुंझुनू, सीकर	शेखावाटी
(6) ब्यावर - अजमेर	मेरवाड़ा
(7) प्रतापगढ़ - बांसवाड़ा के मध्य का भूभाग	छप्पन का मैदान [छप्पन गांवों का समूह होने के कारण]
(8) भैंसरोड़गढ़ से बिजौलिया तक का क्षेत्र	ऊपरमाल [पठार होने के कारण]
(9) उदयपुर के आस-पास का क्षेत्र	गिरवा [पहाड़ी होने के कारण]



जैसलमेर का किला



कीर्तिस्तम्भ
(चित्तौड़गढ़)



गैटोर की छतरी
(जयपुर)

नोट :- क्षत्रप = प्रांत का मुखिया, राज्यपाल [भारत में शक जाति के शासकों हेतु प्रयुक्त]

इतिहास जानने के स्रोत

स्रोत :- मुख्यतः दो भागों में बांटा जाता है।

- पुरातात्विक स्रोत
- साहित्यिक स्रोत



मृदभाण्ड



मुद्रा



शिलालेख



स्मारक

i) **पुरातात्विक स्रोत :-** वे अवशेष जिनसे हमें स्थान एवं घटनाओं के सन्दर्भों को समझने में सहयोग मिले।

मुख्यतः- अभिलेख, मुद्रा, स्मारक, कलाकृतियाँ, उत्खनन में प्राप्त सामग्री



पुरातात्विक अवशेष



उत्खनन में प्राप्त सामग्री

(9) **अभिलेख :-** ये हमें शिलालेखों (पत्थर की पटिकाओं), पाषाण शिलाओं (पत्थर के बड़े खण्ड), स्तम्भों, भवनों, गुफाओं की दीवारों, मूर्ति - प्रतिमाओं, स्तूपों, मठों, तालाबों, खेतों में खड़ी शिलाओं, ताम्रपत्रों पर उत्कीर्ण किये हुए मिलते हैं।

* **प्रमुख अभिलेख :-** नगरी अभिलेख, कंसवा अभिलेख, घटियाला अभिलेख, किराडू अभिलेख, नांदसा और बर्नाला यूप (स्तम्भ) लेख, सामोली शिलालेख

Marudhara
Exam



शिलालेख

- (a) **घटियाला अभिलेख :-** प्रतिहारों का इतिहास जानने का स्रोत
 (b) **बिजौलिया शिलालेख :-** चौहानों का इतिहास जानने का स्रोत
 (c) **चीखा का शिलालेख :-** रावल समरसिंह के युग की जानकारी देता है।

(b) **स्मारक :-** स्मारकों में दुर्ग, भवन, राजप्रसाद (महल), सार्वजनिक भवन, स्नानागार, स्तूप, मंदिर, समाधि, बावड़ी, कूप, विहार, मठ, आदि शामिल हैं।



दुर्ग

(c) **मुद्राएँ :-** मुद्राओं पर चिह्न, भाषा, लिपि, सन्, संवत्, नाम, धातु की शुद्धता, नाप-तौल आदि अंकित होते हैं।

- आहड़, रैड, बैराठ, रंगमहल, सांभर, सुखावियाँ से प्राप्त सिक्के और मुद्राओं से क्षत्रपों, मालव, चौहान, गुहिल आदि वंशों के बारे में जानकारी मिलती है।



प्राचीन सिक्के

(d) **बर्तन और कलाकृतियाँ :-**

- कलाकारी में बर्तनों पर चित्रण, खम्भों पर खुदाई, किवाड़ों व गवाक्ष (गोखड़ों) की कारीगरी
 ➤ उत्खनन में प्राप्त मृद भाण्ड, प्याले, रकाबियाँ, धूपपात्र, दीपक आदि
 ➤ गणेश्वर (नीम का थाना) की ताम्र संस्कृति के अवशेष
 ➤ जोधपुरा (जयपुर) एवं नोह (भरतपुर) से प्राप्त काले एवं लाल मृद भांड
 ➤ आहड़ व शिलुण्ड से प्राप्त प्रस्तर, फलक



प्राचीन बर्तन व कलाकृतियाँ

(e) **ताम्रपत्र :-** ताँबे के छोटे-बड़े पत्रों पर खोदे गये लेख

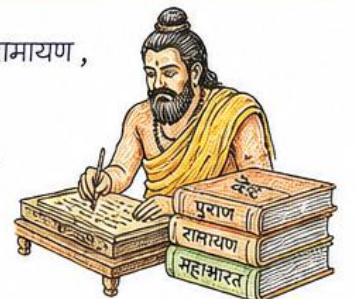
- दान-पुण्य से सम्बन्धित होने के कारण “दानपत्र” भी कहा जाता है।



ताम्रपत्र

ii) **साहित्यिक स्रोत :-** राजस्थान के प्राचीन इतिहास को जानने में वेद-पुराण, रामायण, महाभारत, बौद्ध एवं जैन ग्रंथों से सहायता मिलती है।

- 12वीं शताब्दी के उत्तरार्ध लेखक - जयनायक, महाकाव्य - पृथ्वीराज विजय जिसमें ‘चौहानों की उपलब्धियों का वर्णन।



	लेखक	पुस्तक	विशेष
(1)	जयनायक	पृथ्वीराज विजय	चौहानों की उपलब्धियों का वर्णन
(2)	नयन चन्द्र सूरी	हम्मीर महाकाव्य	चौहानों के इतिहास व अलाउद्दीन खिलजी की रणथम्भौर विजय का वर्णन
(3)	पदमनाभ	कान्हड़देव प्रबंध	—
(4)	दलपत सिंह	दलपत - विलास	बीकानेर के दलपत सिंह
(5)	जग्मा खिड़िया	वचनिका	—
(6)	सूर्यमल्ल मिश्रण	वंश भास्कर	—
(7)	कविराज श्यामलदास	वीर विनोद	—
(8)	विश्वेश्वर नाथ रेड्ड	मारवाड़ राज्य का इतिहास	—
(9)	कर्नल जेम्स टाँड	(1) एनाल्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान (2) पश्चिम भारत की यात्रा	—
(10)	गौरीशंकर हीराचंद ओझा	उदयपुर, जोधपुर, सिरोही, डुंगरपुर, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़ के इतिहास ग्रन्थ	

इतिहास का काल विभाजन :-

इतिहास को तीन कालों में विभक्त किया गया है :-

- (i) प्राक् युग :- वह काल जिसके ज्ञान के लिये कोई लिखित साक्ष्य उपलब्ध नहीं हैं। मानव लेखनकला से अपरिचित था।

कालक्रम → सृष्टि के आरम्भ से हड़प्पा सभ्यता के पूर्व तक



- (ii) आद्या युग :- वह काल जिसके लिखित साक्ष्य तो उपलब्ध हैं, किन्तु वे अस्पष्ट हैं या उनकी लिपि को अभी पढ़ना सम्भव नहीं हुआ है।

कालक्रम → हड़प्पा सभ्यता के काल से 600 ई. पू. तक



- (ii) ऐतिहासिक युग :- वह काल जिसके लिखित साक्ष्य स्पष्ट व सुपठित हैं।

कालक्रम → 600 ई. पू. से वर्तमान तक



मार्गैतिहासिक राजस्थान (प्राक् युग में राजस्थान) :-

- मानव सभ्यता का उद्भू नही - धासियों में हुआ था।
- सैंकों वर्ष पूर्व राजस्थान में मरस्थल के स्थान पर समुद्र विद्यमान था।
- इस समुद्र में सारस्वती और दृषदती नदियों आकर मिलती थीं।
- मानव सभ्यता के उद्भव के इस काल को प्राषण काल कहते हैं।
- पाषाण काल को तीन भागों में बाँटा गया है।-

- (i) पूर्व पाषाण काल
- (ii) मध्य पाषाण काल
- (iii) उत्तर (नव) पाषाण काल



प्रागैतिहासिक औजार

(i) पूर्व पाषाण काल :-

- क्वर्टजाइट पत्थर के अनेक उपकरणों के आधार पर आज से लगभग दो लाख वर्ष पूर्व राजस्थान में एक मानव संस्कृति होने का पता चलता है।
- 1870 ई. में सी. डब्ल्यू. थैमर ने सर्वप्रथम जयपुर एवं इंगरगढ़ से पत्थर की बनी पाषाणकालीन हस्तकुठार (Hand-axe) खोजी।
- सेलकार ने झालावाड़ से इसी काल के कई उपकरण खोजे।



हस्तकुठार
(Hand-axe)

मुख्य उत्खनकर्ता :-

- | | |
|---------------------------------------|--|
| (1) वीरेन्द्रनाथ मिश्र [V.N. मिश्र] | → भारतीय पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, नई दिल्ली |
| | → जैकबने कॉलेज, चुहता |
| (2) रत्नचन्द्र अग्रवाल [R.C. अग्रवाल] | → राजस्थान पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग |
| (3) डॉ. विजय कुमार | → " " " " |
| (4) हरिश्चन्द्र मिश्रा | → " " " " |



→ नक्कल, बनास, व अन्य सहायक नदियों के किनारे पूर्व पाषाणकालीन उपकरण प्राप्त हुए हैं।

→ जाधपुर से इन उपकरणों की खोज → वी. आल्मिन धारा

(ii) मध्य पाषाण काल :-

- पश्चिम राजस्थान में लूणी और अन्य सहायक नदियों, भम्रैड की वेहन नदी धारी और विराह्मर से मध्य पाषाणकालीन उपकरण मिले हैं।
- इस काल के उपकरण धौटे, हलडे, और कुशता से निर्मित थे।



(iii) उत्तर (नव) पाषाण काल :-

- दक्षिण राजस्थान में लूणी और अन्य सहायक नदियों, भम्रैड की वेहन नदी धारी और विराह्मर से नव पाषाणकालीन उपकरण मिले हैं।
- इस काल के उपकरण धातु, हलडे, और कुशता से निर्मित थे।

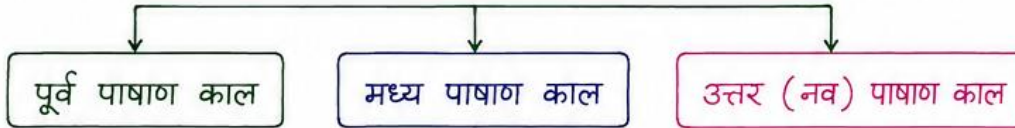


प्रागैतिहासिक राजस्थान (प्राकू युग में राजस्थान) :-

- मानव सभ्यता का उदय नदी घाटियों में हुआ था।
- सैकड़ों वर्ष पूर्व राजस्थान में मरुस्थल के स्थान पर समुद्र विद्यमान था। इस समुद्र में सरस्वती और दृषद्वती नदियों आकर मिलती थी।
- मानव सभ्यता के उद्भव के इस काल को पाषाण काल कहते हैं।
- पाषाण काल को तीन भागों में बाँटा गया है।



प्राचीन नदी घाटी
(कल्पना चित्र)



(i) पूर्व पाषाण काल :-

- क्वार्टजाइट पत्थर के अनेक उपकरणों के आधार पर आज से लगभग 10 लाख वर्ष पूर्व राजस्थान में एक मानव संस्कृति होने का पता चलता है।
- 1870 ई. में सी.ए. हैकेट ने सर्वप्रथम जयपुर एवं इंदूरगढ़ से पत्थर की बनी पाषाणकालीन हस्तकुठार (Hand-axe) खोजी।
- सेटनकार ने झालावाड़ से इसी काल के कई उपकरण खोजे।



हस्तकुठार
(Hand-axe)

मुख्य उत्खननकर्ता :-

- | | |
|------------------------|--|
| (1) वीरेन्द्रनाथ मिश्र | → भारतीय पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, नई दिल्ली |
| (2) रलचन्द्र | → राजस्थान पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग |
| (3) डॉ. विजय कुमार | → " " " " |
| (4) हरिश्चन्द्र मिश्रा | → " " " " |



- चम्बल, बनास, व उनकी सहायक नदियों के किनारे पूर्व पाषाणकालीन उपकरण प्राप्त हुए हैं।
- जालौर से इन उपकरणों की खोज - बी औल्चिन द्वारा

(ii) मध्य पाषाण काल :-

- पश्चिम राजस्थान में लूनी और उसकी सहायक नदियों, चितौड़ की बेडच नदी घाटी और विराटनगर से मध्य पाषाण कालीन उपकरण मिले हैं।
- इस काल के उपकरण छोटे, हल्के, और कुशलता से निर्मित थे।
- ये उपकरण "जैसपर, एगेट, चर्ट, कार्नेलियन, क्वार्टजाइट, कल्सेडोनी आदि पाषाणों से बने हैं।
- इन उपकरणों में ब्लेड, इंग्रेवर, ट्रायएंगल, क्रेसेन्ट, ट्रेपेज, स्क्रैपर, प्वाइंटर आदि उल्लेखनीय हैं।
- पत्थर के बने इन छोटे उपकरणों को माइकोलिथ [लघुपाषाण उपकरण] कहा जाता है।



ब्लेड



इंग्रेवर



ट्रायएंगल



क्रेसेन्ट



ट्रेपेज



स्क्रैपर



प्वाइंटर



(iii) उत्तर (नव) पाषाण-काल :-

- अजमेर, नागौर, सीकर, झुंझुनू, जयपुर, उदयपुर, चित्तौड़, जोधपुर आदि स्थानों से इस काल के उपकरण मिले हैं।



उत्तर (नव) पाषाण कालीन उपकरण

राजस्थान में धातु काल

ताम्रकालीन संस्कृति के प्राचीन स्थल :-

- | | |
|---------------------------------|--------------------------------|
| (i) गणेश्वर (सीकर) | (viii) नन्दलालपुरा (जयपुर) |
| (ii) कालीबंगा (हनुमानगढ़) | (ix) किराडोट (जयपुर) |
| (iii) गगरा गिलुण्ड (राजसमंद) | (x) चीथवाड़ी (जयपुर) |
| (iv) आहड़ व झाड़ोल (उदयपुर) | (xi) एलाना (जालौर) |
| (v) पिण्ड - पाडलियाँ (चित्तौड़) | (xii) बूढ़ा पुष्कर (अजमेर) |
| (vi) कुराड़ा (नागौर) | (xiii) कोल माहोली (सबईमाधोपुर) |
| (vii) साबनिया व पुगल (बीकानेर) | (xiv) मलाह (भरतपुर) |



ताम्रकालीन पात्र

लौह काल :-

- राज. में (i) नोह (भरतपुर) (ii) जोधपुरा (जयपुर) (iii) सुनारी (झुंझुनू)
(iv) रैछ (टोंक)



लौह कालीन उपकरण

- आदि से लौहकालीन उपकरण व हथियार मिले हैं।
- नोह से प्राप्त लौहे के अवशेष भारत में लौह युग के आरंभ होने की सीमा रेखा निर्धारित के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।
- जोधपुरा व सुनारी से लौहे को गलाने की भट्टियाँ और अस्त्र-शस्त्र के व उपकरण बनाने के कारखाने के अवशेष मिले हैं।
- रैछ को लौह सामग्री की प्रचुरता के कारण प्राचीन राजस्थान के “टाटानगर” की संज्ञा दी गई है।
- लौह काल के पश्चात् राज. में सलेटी रंग की चित्रित मृदभाण्ड संस्कृति [Painted Grey ware - PGW] का उदय हुआ।
- इस संस्कृति के अवशेष विराटनगर व जोधपुरा (जयपुर), सुनारी, नोह आदि स्थानों से मिले हैं।
- इस संस्कृति का उदय 600 ई० पू० में हुआ था।



लौह कालीन गलाने की भट्टी



सलेटी चित्रित मृदभाण्ड

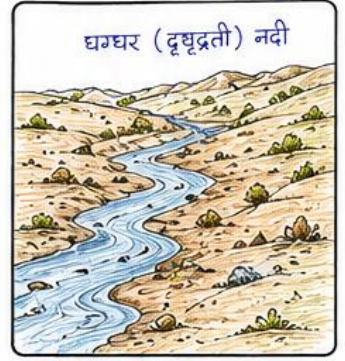


राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ

(1) कालीबंगा सभ्यता :-

- प्राचीन दृष्टद्वती और सरस्वती नदी घाटी क्षेत्र (वर्तमान में घग्घर नदी का क्षेत्र) में कालीबंगा की सभ्यता विकसित हुई।
- यह हड़प्पा सभ्यता से प्राचीन सभ्यता थी। आज से 6 हजार वर्ष से अधिक प्राचीन
- यह हनुमागढ़ जिले में घग्घर नदी के किनारे स्थित है।
- इसका नाम यहाँ प्राप्त काले रंग की “चूड़ियों” के कारण पड़ा है।
- सर्वप्रथम 1952 ई. में अमलानन्द घोष ने इसकी खोज की।
- 1961-62 ई. में बी.बी. लाल, बी० के० थापर द्वारा यहाँ खुदाई का कार्य करवाया गया।
- खुदाई में यहाँ सिंधु-सरस्वती सभ्यता काल का एक नगर मिला जिसके मकानों में ईंटों का प्रयोग किया गया था।
- खुदाई में इस सभ्यता के पाँच स्तर सामने आये थे।

- प्रथम दो स्तर → हड़प्पा से प्राचीन [प्राक् हड़प्पा सभ्यता]
- अंतिम तीन स्तर → हड़प्पा के समकालीन



कालीबंगा की खुदाई स्थल



कालीबंगा से प्राप्त काली चूड़ियाँ

कालीबंगा से प्राप्त अवशेष एवं उनकी विशेषता :-

- कालीबंगा सुव्यवस्थित रूप से बसा हुआ नगर था।
- मकान बनाने में मिट्टी की ईंटों को धूप में पकाकर प्रयुक्त किया जाता था।
- मिट्टी के बर्तन एवं उनके अवशेष पतले और हल्के हैं, तथा उनमें सुंदरता व सुडौलता का अभाव है।
- वर्तन लाल रंग के जिनपर काली एवं सफेद रंग की रेखाएँ रकीलीं गई हैं।
- जुते हुए खेत के साक्ष्य मिले हैं। अनुमान है कि लोग एक ही खेत में दो फसलें उगाते थे।
- एक कंकाल की खोपड़ी में छः छिद्र मिले हैं। [मस्तिष्क शोध बीमारी के इलाज का प्रमाण]
- बस्ती के गंदे पानी के निकास के लिए यहाँ लकड़ी व ईंटों की नालियाँ बनी हुई थीं।
- यहाँ चबूतरे भी मिले हैं, जिन पर अग्निकुण्ड (वेदिकाएँ) बने हुए हैं। [धार्मिक कार्यों की सम्भावना]
- दूसरे टीले के उत्खनन में एक दुर्ग के अवशेष मिले हैं।
- खुदाई में गाय के मुख वाले प्याले, ताँबे के बैल, काँस्थ के दर्पण, हाथी दाँत का कंघा, मिट्टी के बर्तन, काँच की मणियाँ, खिलौने आदि प्राप्त हुए हैं।
- बाद में नदियों के सूखने और मरुस्थल बढ़ने से यह सभ्यता उजड़ गई।



कालीबंगा से प्राप्त मृदपात्र



अग्निकुण्ड (वेदिका)



गाय के मुख वाला प्याला



ताँबे का बैल



काँस्थ का दर्पण



हाथी दाँत का कंघा



काँच की मणियाँ



मिट्टी का खिलौना



(2) आहड़ सभ्यता :-

- आघाटपुर भी कहा जाता था। [10 वीं या 11 वीं शताब्दी में]
- उदयपुर के पूर्व में आहड़ (बेडच) नदी के किनारे दो टीले स्थित हैं, जिन्हें धूलकोट कहते हैं।
- यह बस्ती पहले ताम्रवती (ताँबावती) के नाम से जानी जाती थी।
[सम्भवतः ताँबे के औजारों के निर्माण का केन्द्र होने के कारण]
- सर्वप्रथम 1953 ई. में यहाँ अक्षय कीर्ति व्यास ने उत्खनन करवाया।
- बाद में रतनचन्द्र अग्रवाल एवं एच. डी. सांकलिया के निर्देशन में उत्खनन हुआ।
- यह चार हजार वर्ष पुरानी पाषाण धातु युगीन सभ्यता थी।



आहड़ के धूलकोट टीले



आहड़ की खुदाई का दृश्य

आहड़ से प्राप्त अवशेष एवं उनकी विशेषताएँ :-

- मकान बनाने में धूप में सुखाई गई ईंटों एवं पत्थरों का प्रयोग होता था।
- लोग अपने मृतकों को गहनों व आभूषणों के साथ दफनाते थे।
[मृत्यु के बाद भी जीवन की अवधारणा]
- खुदाई में मिट्टी के बर्तन सर्वाधिक मिले हैं। जो आहड़ को लाल - काले मिट्टी के बर्तन वाली संस्कृति का प्रमुख केन्द्र सिद्ध करते हैं।
- खुदाई में ठपये प्राप्त हुए हैं, जो रंगाई - छपाई व्यवसाय के उन्नत होने का अनुमान हैं।
- मकानों की छत बाँस और केलू से बनी होती थी।
- बड़े कमरों के बीच में बाँस की परदी पर मिट्टी चढ़ाकर उसे छोटे-छोटे (ओवरों) में विभाजित किया जाता था।
- मकानों में चार से छः चूल्हे मिले हैं जो संयुक्त परिवार या सामूहिक भोजन विधि के साक्ष्य हैं।
- यहाँ उच्च कोटि के चावल उत्पादित होते थे।
- आहड़ में भट्टीनुम चूल्हा मिला है [ताँबा पिघलाये जाने के अनुमान]
- आहड़वासी बर्तन बनाने की कला में दक्ष थे। यहाँ मिले लाल-भूरे मृदभांड हाथ की सफाई तथा अलंकरण की दृष्टि से उत्कृष्ट थे।
- धूलकोट के 1951-52 ई. में हुए उत्खनन में तशतरियाँ, दीपक, धूपदानियाँ, कटोरियाँ, मटके, कलश, चूड़ियाँ, खिलौने, 26 किस्म के मनिये, 6 ताँबे की मुद्राएँ, और तीन मुहरे प्राप्त हुई हैं।
- इस सभ्यता के लोग उत्तर-पूर्व और दक्षिण-पूर्व की ओर बड़े तथा गिलुण्ड व भगवानपुरा जैसे स्थान बसाए।
- अमूमन यह सभ्यता प्राकृतिक प्रकोप से विध्वंस हुई।



आहड़ की लाल-काली मृदभांड



भट्टीनुम चूल्हा



दफनाया गया मानव कंकाल



तशतरियाँ व दीपक



धूपदानियाँ



कटोरियाँ व मटके



कलश



चूड़ियाँ



खिलौने



26 किस्म के मनिये



6 ताँबे की मुद्राएँ



तीन मुहरे

(3) बालाथल :-

- यह सभ्यता उदयपुर जिले की बल्लभनगर तहसील के बालाथल में मिली।
- यह ताम्रपाषाण कालीन सभ्यता हैं, जो आहड़ संस्कृति से सम्बन्धित हैं।
- यहाँ मिश्रित अर्थव्यवस्था प्रचलित थी। कृषि पशुपालन, शिकार तीनों जीविका के साधन थे।

बालाथल से प्राप्त अवशेष व उनकी विशेषताएँ :-

- यहाँ 11 कमरों का एक बड़ा भवन एवं दुर्ग जैसे चिह्न प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ ताँबे के चाकू, कुल्हाड़ी, छैनी, बाग जैसे उपकरण व कर्णफूल, गले के हार की लटकन आदि आभूषण मिले हैं।
- लौहकाल के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं। लोहा गलाने की भट्टियों के चिह्न मिले हैं।
- बुना हुआ वस्त्र प्राप्त हुआ है। [वैराठ के अतिरिक्त बालाथल एकमात्र स्थान]



बालाथल के उत्खनन स्थल



ताँबे के उपकरण



कर्णफूल



गले के हार की लटकन



बुना हुआ वस्त्र

(4) गिलूण्ड सभ्यता :-

- राजसमन्द जिले के गिलूण्ड कस्बे में बनास नदी के किनारे यह सभ्यता मिली।
- दो टीलों का उत्खनन किया गया था।
- यह आहड़ संस्कृति से जुड़ी सभ्यता थी।
- इसे “बनास संस्कृति” के नाम से जाना जाता है।
- 1957-58 ई में बी. बी. लाल के निर्देशन में उत्खनन किया गया।
- 1998 से 2003 ई. के मध्य पूना के डॉ. वी. एस. शिन्दे एवं पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय (अमेरिका) के प्रो० ग्रेगरी पोंशल के निर्देशन में उत्खनन किया गया।
- खुदाई में ताम्रयुगीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं। [समय काल → 1900-1700 ई. पूर्व]



गिलूण्ड के उत्खनन स्थल



बनास नदी

गिलूण्ड से प्राप्त अवशेष व उनकी विशेषताएं :-

→ गिलूण्ड से पाँच प्रकार के मिट्टी के बर्तन मिले हैं।

सादे, काले, पॉलिशदार भूरे, लाल और काले चित्रित मृदभांड



सादा

काला

पॉलिशदार भूरे

लाल

काले चित्रित

→ खुदाई में मिट्टी के खिलौने, पत्थर की गोलियाँ एवं हाथी दाँत की चुड़ियाँ के अवशेष मिले हैं।



मिट्टी के खिलौने



पत्थर की गोलियाँ



हाथी दाँत की चुड़ियाँ

→ गिलूण्ड में पक्की ईंटों (आग में पकाई हुई ईंटें) का उपयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है।



पक्की ईंटें

(5) बागोर सभ्यता :-

- भीलवाड़ा जिले के बागोर में कोठारी नदी तट पर यह सभ्यता प्राप्त हुई।
- उत्खनन डॉ. वी. एन. मिश्र के निर्देशन में 1967 से 1970 ई. तक किया गया।
- यहाँ प्रागैतिहासिक काल की सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए हैं। जो चार से पाँच हजार ईसा पूर्व के माने जाते हैं।



बागोर का उत्खनन स्थल

बागोर सभ्यता से प्राप्त अवशेष व उनकी विशेषताएँ :-

- बड़ी संख्या में लघु पाषाण उपकरण मिले हैं। [निवासियों के आखेटक होने का प्रमाण]
- ताँबे के उपकरण प्राप्त हुए हैं। [इसमें छेद वाली सुई सबसे महत्वपूर्ण हैं।]
- कृषि व पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- बागोर मध्य पाषाण कालीन सभ्यता का स्थल और लघु पाषाण उपकरण का प्रमुख केन्द्र था।



लघु पाषाण उपकरण



ताँबे के उपकरण



छेद वाली सुई



कृषि के साक्ष्य



पशुपालन के साक्ष्य

(6) गणेश्वर सभ्यता :-

- गणेश्वर (नीम का थाना, सीकर) में कांतली नदी के उद्गम पर यह सभ्यता खोजी गयी। यहाँ उत्खनन हुआ।
- यह ताम्रयुगीन सभ्यता का स्थल है।
- रतनचन्द्र अग्रवाल के निर्देशन में यहाँ उत्खनन हुआ
- यहाँ 2800 ई० पूर्व की सभ्यता के अवशेष मिले हैं।
- यह संस्कृति पूर्वी राजस्थान एवं गंगाघाटी के क्षेत्र में पल्लवित हुई।
- गणेश्वर में ताम्र उपकरण बहुतायत में मिलते हैं। [कारण खेतड़ी ताम्र भण्डार की निकटता]
- यह सभ्यता “ताम्र सभ्यताओं की जननी” मानी जाती है।



कांतली नदी (गणेश्वर)



गणेश्वर का उत्खनन स्थल

सभ्यता से प्राप्त अवशेष व उनकी विशेषताएँ :-

- ताम्र उपकरणों में बाण, छैनियाँ, मछली पकड़ने के काँटे, उसारे के फलक, अंगूठियाँ आदि प्रमुख हैं।
- यहाँ से दोहरी पेचदार शिरावली ताम्र पिनों को पश्चिमी तथा मध्य एशिया में निर्यात किये जाने का अनुमान है।
- यहाँ से मिट्टी के दो प्रकार के बर्तन मिले हैं।



ताम्र उपकरण

1. हड़प्पा पूर्व संस्कृति के हल्के लाल रंग के पतले बर्तन
2. लाल चिकनी मिट्टी विशिष्ट चित्रकारी वाले मजबूत बर्तन।

इन बर्तनों में मर्तबान, कलश, प्याले, तसले, ढक्कन-हाण्डी प्रमुख हैं।

- यहां से प्राप्त ताँबे के उपकरणों व पात्रों में 99% ताँबा है।
- यहां से प्राप्त मिट्टी के बर्तनों को “कृष्णवर्णी मृदभांड” कहते हैं, जो काले व नीले रंग से सजाये हुए हैं।
- यहां से ताँबा हड़प्पा व मोहनजोदड़ो को भेजा जाता था।
- यह सभ्यता ताम्र पाषाण काल की थी, किन्तु ऊपरी स्तर पर लौह युग के अवशेष प्राप्त हुए हैं।



हल्के लाल रंग के पतले बर्तन



लाल चिकनी मिट्टी के चित्रित मजबूत बर्तन



मर्तबान, कलश, प्याले, तसले, ढक्कन-हाण्डी



दोहरी पेचदार शिरावली ताम्र पिनें



कृष्णवर्णी मृदभांड

(7) बैराद :-

- जयपुर जिले में स्थित बैराद कस्बा हर युग में सभ्यता संस्कृति का प्रमुख केन्द्र रहा है।
- इसकी बीजक की पहाड़ी और भीम डूंगरी पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।
- महाभारत में इसका उल्लेख मत्स्य जनपद की राजधानी विराट नगर के रूप में हुआ।
[पाण्डवों के अज्ञातवास के अन्तिम दिन यही व्यतीत होने की बात कही जाती है।]
- यह मौर्यकाल का भी एक प्रमुख केन्द्र था। यहाँ अशोक के दो स्तम्भ लेख [भाबू या बैराद शिलालेख] प्राप्त हुए हैं। [अशोक के बौद्ध होने का प्रमाण]
- यहाँ बौद्धमठ के अवशेष प्राप्त हुए हैं।



बीजक की पहाड़ी



भाबू (बैराद) शिलालेख



बौद्धमठ के अवशेष

बैराद से प्राप्त अवशेष एवं उनकी विशेषताएँ :-

- एक कमरे में 36 चाँदी की मुद्राएं मिली हैं। [8 पंचमार्क, 28 भारतीय यूनानी शासकों की]
- खुदाई में स्वास्तिक तथा त्रिरत्न चक्र के चिह्न युक्त अलंकृत घड़े, दीपक, नाचता हुआ पक्षी, पत्थर की संडूकें, लोहे की कीलें एवं हाथ से बना हुआ वस्त्र भी मिला है।
- यहाँ से एक गोल मंदिर व अशोक स्तम्भ के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- दयाराम साहनी, नील रत्न बनर्जी, कैलाशनाथ दीक्षित जैसे विद्वानों ने यहाँ उत्खनन करवाया।



चाँदी की मुद्राएं



स्वास्तिक युक्त घड़ा



त्रिरत्न चक्र का चिह्न



नाचता हुआ पक्षी



पत्थर की संडूक



गोल मंदिर

अन्य महत्वपूर्ण प्राचीन सभ्यताएँ :-

(i) भीनमाल :- जालोर जिले की भीनमाल सभ्यता भी एक महत्वपूर्ण सभ्यता थी।

उत्खनन आर. सी. अग्रवाल

- इसका प्राचीन नाम श्रीमाल था।
- यहाँ से एक रोमन सेम्फोरा (सुरापात्र) व यूनानी सुराही मिली हैं।
[व्यापार केन्द्र होने का प्रमाण]



रोमन सेम्फोरा (सुरापात्र)



यूनानी सुराही

(ii) ईसवाल :- उदयपुर जिले के ईसवाल से स्थिति प्राकृ ऐतिहासिक कालीन सभ्यता।

- समृद्ध लौह उद्योग के साक्ष्य



लौह उद्योग के अवशेष

(iii) रंगमहल - हनुमानगढ़	(iv) ओझियाना - भीलवाड़ा	(v) नगरी - चित्तौड़
(vi) बरोर - गंगानगर	(vii) तिलवाड़ा - बाड़मेर	(viii) जोधपुरा - जयपुर
(ix) सुनारी - झुंझुनू	(x) नोह - भरतपुर	(xi) नगर - टोंक
↓	↓	↓



रंगमहल (हनुमानगढ़)



ओझियाना (भीलवाड़ा)



नगरी (चित्तौड़)



तिलवाड़ा (बाड़मेर)



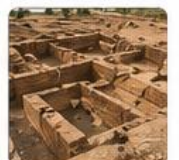
जोधपुरा (जयपुर)



सुनारी (झुंझुनू)



नोह (भरतपुर)



नगर (टोंक)

राजस्थान में आर्य संस्कृती का प्रसार :-

- हड़प्पा सभ्यता के पतन के बाद भारतीय इतिहास में वैदिक सभ्यता का प्रारम्भ हुआ।
[1800 ई० पू० के आसपास]
- इस सभ्यता को जानने का प्रमुख स्रोत चार वेद हैं अतः इसे वैदिक सभ्यता कहा गया।
[ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद]
- राजस्थान में इस सभ्यता के अवशेष अनुपगढ़, तरखान वाला डेरा, चल - 64 से मिले हैं।



वैदिक यज्ञ

महाकाव्य काल :- राजस्थान में आर्यों की अनेक बस्तियों के उल्लेख मिलते हैं।

रामायण से :- राम-रावण युद्ध के समय राजस्थान के भू-भाग का वर्णन

- समुद्र सेतु निर्माण के दौरान भगवान श्री राम द्वारा क्रोध में अमोघ अस्त्र संगुंद्र पर छोड़ने के स्थान पर राजस्थान की ओर चलाने का वर्णन मिलता है।
- रामायण के अनुसार जिस स्थान पर अमोघ अस्त्र चलाया गया वहां समुद्र विद्यमान था जहाँ अस्त्र के प्रभाव से मरुस्थल का निर्माण हुआ।
- वैज्ञानिक आधार पर पहले राज में मरुस्थल के स्थान पर टेथिस सागर था।



अमोघ अस्त्र का वर्णन

महाभारत से :- महाभारत में भी राजस्थान के आर्यों का उल्लेख हुआ है।

- इसके अनुसार राजस्थान का जांगलदेश (बीकानेर) कौरव - पाण्डव राज्य के अधीन था।
- मत्स्य राज उनका मित्र या अधीनस्थ राज्य था।
- अज्ञातवास का एक वर्ष पाण्डवों ने भेष बदलकर मत्स्य देश के शासक विराट के दरबार में व्यतीत किया था।
- महाभारत युद्ध में राजा विराट पाण्डवों की तरफ से लड़ते हुए मारे गये थे।



महाभारत युद्ध

Note:- महाभारत के युद्ध के पश्चात् से महात्मा बुद्ध के समय तक का राजस्थान का इतिहास भी अंधकारमय है।

कारण - इस समय के बारे में जानने के पर्याप्त पुरातात्विक व लिखित साक्ष्य प्राप्त नहीं होते हैं।

❖ बौद्ध ग्रन्थों के आधार पर विद्वानों के अनुसार छठी शताब्दी ई० पू० में भारतीय राजनीति के रंगमंच पर दो प्रवृत्तियां विशेष रूप से दिखाई देती हैं- प्रथम जनपदों का उदय और द्वितीय साम्राज्य विस्तार हेतु जनपदों के मध्य संघर्ष।



भगवान बुद्ध

राजस्थान के जनपद :-

- राजस्थान में अनेक जनपदों का उदय, विकास और पतन हुआ।
- बौद्ध साहित्य (बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तर निकाय से हमें 16 महाजनपदों की सूची प्राप्त होती है। 16 महाजनपदों में से मत्स्य जनपद राजस्थान में स्थित था।
- राजस्थान के अनेक भाग कुरु, शूरसेन और अवन्ति महाजनपदों के अन्तर्गत थे।
- चित्तौड़ के आसपास का क्षेत्र शिवि जनपद
- 327 ई० पू० में सिकन्दर के आक्रमण के दौरान पश्चिमोत्तर सीमा से “मालव, यौधेय, आर्जुनायन कबीले राजस्थान में आकर बसे

प्राचीन राजस्थान के प्रमुख जनपद

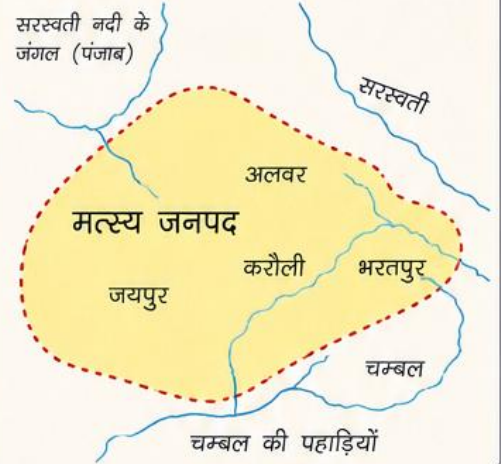


जनपदों का मानचित्र

(1) मत्स्य जनपद :-

- आर्य "जन" के रूप में मत्स्य जाति का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद में हुआ है।
- ब्राह्मण और कौषीतकी उपनिषद् में भी मत्स्य जन का उल्लेख मिलता है।
- महाभारत में भी मत्स्य जनपद का उल्लेख है।
- अनुमान से दक्षिण में इसका विस्तार चम्बल की पहाड़ियों तक और पश्चिम में पंजाब में सरस्वती नदी के जंगलों तक था।
- इस प्रदेश में आधुनिक जयपुर, अलवर, धौलपुर, करौली व भरतपुर के कुछ भाग सम्मिलित थे।
- महाभारत काल में इस जनपद को राजा विराट था जिसने जयपुर से 85 km दूर विराट नगर (बैराठ) [वर्तमान कोटपूतली - बहरोड़ जिला] बसाकर उसे अपनी राजधानी बनाया।
- विराट की पुत्री उत्तरा का विवाह अर्जुन के बेटे अभिमन्यु से हुआ। बाद में इनके पुत्र परीक्षित पाण्डवों के राज्य का उत्तराधिकारी बने।
- मत्स्य जनपद के इतिहास के बारे में महाभारत काल के बाद अधिक जानकारी नहीं है।

मत्स्य जनपद का विस्तार (अनुमानित)



राजा विराट अपनी पुत्री उत्तरा व सभा में अर्जुन (बृहन्ना रूप में) एवं बालक अभिमन्यु के साथ



विराटनगर (बैराठ) के उत्खनन अवशेष



बैराठ (विराटनगर) से प्राप्त अशोक का शिलालेख

डा. गोपीनाथशर्मा के अनुसार :-

- महाभारत के बाद कुरु और यादव जनपद निर्बल हो गये। अतः मत्स्य जनपद शक्तिशाली हो गया और राजधानी विराटनगर की समृद्धि में वृद्धि हुई।
- मत्स्य जनपद के निकट आधुनिक अलवर के कुछ भागों में शाल्व जाति रहती थी। अस्पष्ट सीमा को लेकर मत्स्य जनपद व शाल्व जाति के मध्य संघर्ष होता रहता था।
- शाल्वों की तरह चेदि जनपद भी मत्स्य जनपद का पड़ोसी था।
- एक समय में चेदि जनपद ने मत्स्य जनपद पर आक्रमण कर उसे अपने राज्य में मिला लिया।
- अनुमान के अनुसार मत्स्य जनपद अधिक समय तक चेदि राज्य के अधीन नहीं रहा एवं कुछ समय पश्चात स्वतंत्र हो गया।
- कुछ समय पश्चात मगध साम्राज्य ने मत्स्य जनपद को अपने साम्राज्य में मिला लिया।
- मौर्य काल के दौरान मत्स्य जनपद मौर्य साम्राज्य के अन्तर्गत था।
- मत्स्य जनपद की राजधानी विराटनगर (बैराठ) से प्राप्त अशोक का शिलालेख और अन्य मौर्य युगीन अवशेष इस तथ्य की पुष्टि करते हैं।

मत्स्य जनपद



यह जनपद प्राचीन सभ्य एवं सुव्यवस्थित था। यहाँ कृषि, पशुपालन एवं व्यापार प्रमुख व्यवसाय थे।

मत्स्य जनपद की राजधानी



राजा विराट ने विराटनगर (बैराठ) को अपनी राजधानी बनाया। यह आधुनिक कोटपूतली-बहरोड़ जिले में स्थित है।

उत्तरा-अभिमन्यु-परीक्षित



उत्तरा का विवाह अर्जुनपुत्र अभिमन्यु से हुआ। इनके पुत्र परीक्षित पाण्डवों के राज्य के उत्तराधिकारी बने।

मत्स्य जनपद के पुरातात्विक साक्ष्य



विराटनगर (बैराठ) से अशोक का शिलालेख एवं मौर्यकालीन अन्य अवशेष प्राप्त हुए हैं। यह मत्स्य जनपद की प्राचीनता की पुष्टि करते हैं।